IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 4.819

Volume 7, Issue 1, July 2020

Hkkjr foHkktu dh =kIknh

M,- mn;Hkku ;kno

vflLVsaV izksQslj] fgUnh

राजकीय महिला महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़

सन् 1947 ई0 में भारत को स्वतंत्रता के आहलाद के साथ–साथ विभाजन का दं”ा भी मिला। अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज्य करो'; की नीति की चरम परिणति साम्प्रदायिक हिंसा में परिलक्षित हो रही थी। अंग्रेजों ने अपनी अलगाववादी राजनीति की सहायता से धर्म के आधार पर संस्कृति के बँटवारे को मंजूरी दी थी। मुस्लिम लीग की हठवादी प्रवृत्ति, हिन्दू महासभा का प्रतिक्रियात्मक रूप और कांग्रेस की मौन सहमति ने भारत–विभाजन के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया था। ''यह एक अजीब स्थिति थी कि हमारे राष्ट्रीय संगठन ने विभाजन के पक्ष में निर्णय लिया लेकिन लोगों ने विभाजन पर शोक प्रकट किया।''[1]

मुस्लिम लीग जो लम्बे समय से मुसलमानों का प्रतिनिधि होने का दावा करती आ रही थी और विभाजन की जिद पर अड़ी हुई थी वे कार्यकर्ता विभाजन के बाद मुसलमानों का हश्र देखकर हतप्रथ थे। ''देश के विभाजन की जो तस्वीरे उन्होंने बनाई थी। उसका वास्तविक स्थिति से कोई मेल नहीं था। मुस्लिम लीग के कार्यकर्ता ये सोचते थे, कि मुसलमान चाहे अल्पसंख्यक प्रान्तों के हो या बहुसंख्यक प्रान्तों के रहने वाले हों, उनका एक अलग राष्ट्र बनाया जाएगा और उन्हें अपने भविष्य को स्वयं निर्धारित करने का अधिकार प्राप्त होगा। अब जब कि मुस्लिम बहुत प्रान्त भारत से बाहर चले गये, पंजाब और बंगाल भी बँट गये और जिन्ना कराची के लिए रवाना हो गये, तो इन मूर्खों की समझ में आया कि उन्होंने हिन्दुस्तान के विभाजन से कुछ भी हासिल नहीं किया बल्कि वास्तव में सब कुछ खो दिया।''[2]

---

1. मौलाना अबुल कलाम आजाद–इण्डिया विंग्स फ्रीडम उद्धृत–भारत में साम्प्रदायिकता इतिहास और अनुभव, पृ0 103
2. असगर अली इंजीनियर– भारत में साम्प्रदायिक इतिहास और अनुभव, पृ0 104.

Copyright to IJARSCT